ताल आधारित संगीत अभ्यासक्रम

भाग - 1

8 मात्रिक ताल कहरवा

स्वरांकन - छंदोलय - प्रासानुप्रास

by

Uday Shah

115/A, Dharmin Nagar, Kabilpore, Navsari – 396424 (Gujarat – India).

(M) +91-9428882632

Website : https://sites.google.com/site/udayshahghazal/

Youtube Link : https://www.youtube.com/user/udaysshah10/videos

: Publisher :

Kalanidhi Studio

C/O Rajendra Parekh

410, Gidc Lic sector, Opposite Chandralok Building,

Near D Mart Chanod, Vapi silvassa Road, Chanod,

Vapi – 396195 (Gujarat – India).

(M) +91-9825166163

Youtube Link : https://www.youtube.com/user/kalanidhivapi

पुस्तक की विशेषता

1	इस पुस्तक में आठ मात्रिक ताल कहरवा की पहली मात्रा से ले कर आठवीं मात्रा तक से आरंभ होने वाले सभी प्रकार के गीतों को (कुल 9 गीतों को) प्रस्तुत किया गया है।
2	सभी गीतों के स्वरांकन के साथ साथ गीतों के छंदोलय और प्रासानुप्रास (क़ाफ़िया-रदीफ़) की चर्चा को भी प्रस्तुत किया गया है।
3	इस पुस्तक में प्रस्तुत गीतों के छंद और गीतों में प्रयुक्त ताल के संबंध को भी प्रस्तुत किया गया है।
4	इस पुस्तक में प्रस्तुत गीतों के अभ्यास से गीत-ग़ज़ल लेखन के तकनीकी विषयों को भी समझा जा सकता है।

अनुक्रमाणिका

August - 2022

Applications (Part A)

1.
रदीफ़ (अनुप्रास) :-
पंक्ति के अंत में प्रयोग किये गए एकसमान शब्द या शब्दसमुह को रदीफ़ या अनुप्रास कहा जाता है।

2.
क़ाफ़िया (प्रास) :-
रदीफ़ (अनुप्रास) से बराबर पहले प्रयोग किये गए समान उच्चारांत वाले शब्दों को क़ाफ़िया या प्रास कहा जाता है।

Applications (Part B)

छंद में ऊपर बिंदी मुख्य पद्यभार और नीचे बिंदी गौण पद्यभार को दर्शाती है। छंद के मुख्य और गौण पद्यभार संगीत में ताल के सम, ताली और खाली से संबंधित है।

Applications (Part C)

शुद्ध स्वर : सा रे ग म प ध नि
विकृत (कोमल-तीव्र) स्वर : रे॒ ग॒ म॒ ध॒ नि॒
मध्य सप्तक : कोई निशानी नहीं
मंद्र-सप्तक : नीचे बिंदी
तार-सप्तक : ऊपर बिंदी
चुप रहने का समय : *
कहीं-कहीं पर ज़रूरत पड़ने पर एक मात्रा के दो समान भाग करने के लिए / चिह्न का भी प्रयोग किया गया है।

Applications (Part D)

सा	रे॒	रे	ग॒	ग	म	म॒	प	ध॒	ध	नि॒	नि
C	C# D^b	D	D# E^b	E	F	F# G^b	G	G# A^b	A	A# B^b	B

Applications (Part E)

ल = लघुअक्षर = अ, इ, उ और ऋ स्वर तथा वही स्वरयुक्त व्यंजन कि जिसका उच्चारण समय एक मात्रा हो।

गा = गुरुअक्षर = आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं और अ: स्वर तथा वही स्वरयुक्त व्यंजन कि जिसका उच्चारण समय दो मात्रा हो।

जोडाक्षर का थड़का उससे पहले वाले लघु पर लगता हो तो वो लघु भी गुरु ही कहलाएगा।

उच्चार में एकसाथ बोले जाते दो लघु का समूह कि जिसमें दूसरा लघु अकारांत हो, ग़ज़ल के छंदों में वो दोनों लघु को मिला कर एक गुरु ही कहा जाएगा। हम, तुम, दिल जैसे शब्दों का लगात्मक वज़न लल के बजाय गा ही कहलाएगा। ग़ज़ल के छंदों में ग़ज़ल शब्द का लगात्मक वज़न उच्चारण के हिसाब से ग़+ज़ल = ल+गा = लगा ही कहलाएगा।

लघु-गुरु छूट के सामान्य नियम :-

१.

सभी एकाक्षरी गुरु शब्द और सभी गुरु प्रत्यय का गुरु के अलावा लघु के वज़न में भी प्रयोग किया जा सकता है।

२.

अंत्याक्षर गुरु हो ऐसे लगभग तमाम शब्दों के अंत्य गुरु का गुरु के अलावा लघु के वज़न में भी प्रयोग किया जा सकता है।

३.

तेरा, मेरा, तेरी, मेरी, तेरे, मेरे और कोई शब्द गागा वज़न (स्वरूप) के है, मगर इनका गागा के अलावा गाल, लगा और लल वज़न (स्वरूप) में भी प्रयोग किया जा सकता है।

गीत

फ़िल्म : सागर (1985)
गीतकार : जावेद अख़्तर
संगीतकार : आर. डी. बर्मन
गायक : किशोरकुमार

चेहरा है या चांद खिला है ज़ुल्फ़ घनेरी शाम है क्या
सागर जैसी आंखों वाली ये तो बता तेरा नाम है क्या

तू क्या जाने तेरी ख़ातिर कितना है बेताब ये दिल
तू क्या जाने देख रहा है कैसे कैसे ख़्वाब ये दिल
दिल कहता है तू है यहां तो जाता लम्हा थम जाए
वक़्त का दरिया बहते बहते इस मंज़र में जम जाए
तूने दीवाना दिल को बनाया इस दिल पर इल्ज़ाम है क्या
सागर जैसी आंखों वाली ये तो बता तेरा नाम है क्या

आज मैं तुझसे दूर सही और तू मुझसे अंजान सही
तेरा साथ नहीं पाऊं तो ख़ैर तेरा अरमान सही
ये अरमां है शोर नहीं हो ख़ामोशी के मेले हो
इस दुनिया में कोई नहीं हो हम दोनों ही अकेले हो
तेरे सपने देख रहा हूं और मेरा अब काम है क्या
सागर जैसी आंखों वाली ये तो बता तेरा नाम है क्या

स्थायी :-
मूल रदीफ़ : है क्या
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+म (शाम-नाम)

अंतरा 1 :-
पहली दो पंक्ति की रदीफ़ : ये दिल
पहली दो पंक्ति की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ब (बेताब-ख़्वाब)
दूसरी दो पंक्ति की रदीफ़ : जाए
दूसरी दो पंक्ति की क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+म (थम-जम)
मूल रदीफ़ : है क्या
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+म (इल्ज़ाम-नाम)

अंतरा 2 :-
पहली दो पंक्ति की रदीफ़ : सही
पहली दो पंक्ति की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+न (अंजान-अरमान)
दूसरी दो पंक्ति की रदीफ़ : हो
दूसरी दो पंक्ति की क़ाफ़िया-व्यवस्था : एकार+ले (मेले-अकेले)
मूल रदीफ़ : है क्या
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+म (काम-नाम)

छंद : गांगाग़ागा गांगाग़ागा गांगाग़ागा गांगाग़ा

गांगाग़ागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।

गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2
चेह्	रा	है	या	चां	दखि	ला	है	ज़ुल्	फ़घ	ने	री	शा	महै	क्या
सा	गर	जै	सी	आं	खों	वा	ली	ये	तोब	ता	तेरा	ना	महै	क्या
तू	क्या	जा	ने	ते	री	ख़ा	तिर	कित	ना	है	बे	ता	बये	दिल
तू	क्या	जा	ने	दे	खर	हा	है	कै	से	कै	से	ख़्वा	बये	दिल
दिल	कह	ता	है	तू	हैय	हां	तो	जा	ता	लम्	हा	थम	जा	ए
वक़्	तका	दर	या	बह	ते	बह	ते	इस	मं	ज़र	में	जम	जा	ए
तू	नेदी	वा	ना	दिल	कोब	ना	या	इस	दिल	पर	इल्	ज़ा	महै	क्या
सा	गर	जै	सी	आं	खों	वा	ली	ये	तोब	ता	तेरा	ना	महै	क्या

आठ मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंकित का पहली मात्रा से आरंभ)

गां	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

गां	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

इस छंद कुछ रचनाओं में हरेक पंक्ति का आरंभ ताल कहरवा की दूसरी मात्रा से भी देखा गया है।

ताल : कहरवा (8 मात्रा)
हरेक पंकित का पहली मात्रा से आरंभ

Original Scale : A (सफ़ेद 6) = सा
गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग् ग म म् प ध् ध नि् नि

चे	ह	रा	-	है	-	या	-	चां	-	द	खि	ला	-	है	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	-	प़	-	प़	ध़्	प़	-	प़	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

ज़ु	ल्	फ़	घ	ने	-	री	-	शा	-	म	है	क्या	-	-	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	रे	सा	-	-	नि़	सा	नि़्	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

सा	-	ग	र	जै	-	सी	-	आं	-	खों	-	वा	-	ली	-
नि़्	रे	रे	म	म	रे	रे	सा	नि़्	-	नि़्	ध़	नि़्	ध़	नि़्	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

ये	-	तो	ब	ता	-	ते	रा	ना	-	म	है	क्या	-	-	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	रे	सा	-	-	नि़	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

तू	-	क्या	-	जा	-	ने	-	ते	-	री	-	ख़ा	-	ति	र
प	म्	प	ग्	ग्	सा	सा	-	सा	नि़	सा	रे	रे	-	रे	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

कि	त	ना	-	है	-	बे	-	ता	-	ब	ये	दि	ल	-	-
ग॒	रे	ग॒	सा	सा	-	रे	म	ग॒	-	-	रे	ग॒	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

तू	-	क्या	-	जा	-	ने	-	दे	-	ख	र	हा	-	है	-
प	म॒	प	ग॒	ग॒	सा	सा	-	सा	नि़	सा	रे	रे	-	रे	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

कै	-	से	-	कै	-	से	-	ख़्वा	-	ब	ये	दि	ल	-	-
ग॒	रे	ग॒	सा	सा	नि॒	रे	सा	सा	-	-	नि़	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

दि	ल	क	ह	ता	-	है	-	तू	-	है	य	हां	-	तो	-
ग॒	रे	रे	सा	सा	-	सा	-	ग॒	रे	रे	सा	सा	-	सा	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

जा	-	ता	-	ल	म्	हा	-	थ	म	जा	-	ए	-	-	-
ग॒	रे	रे	सा	सा	-	सा	-	सा	नि़	सा	रे	रे	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

व	क़्	त	का	द	रि	या	-	ब	ह	ते	-	ब	ह	ते	-
ग	-	ग	ग	ग	-	ग	म	म	-	म	ग	म	ग	म	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

इ	स	मं	-	ज़	र	में	-	ज	म	जा	-	ए	-	-	-
नि॒	रे	रे	म	म	ग॒	रे	नि॒	सा	-	सा	नि़	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

तू	-	ने	दी	वा	-	ना	-	दि	ल	को	ब	ना	-	या	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	-	प़	-	प़	ध़्	प़	-	प़	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

इ	स	दि	ल	प	र	इ	ल्	ज़ा	-	म	है	क्या	-	-	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	रे	सा	-	-	ऩि	सा	ऩि्	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

सा	-	ग	र	जै	-	सी	-	आं	-	खों	-	वा	-	ली	-
ऩि्	रे	रे	म	म	रे	रे	सा	ऩि्	-	ऩि्	ध़	ऩि्	ध़	ऩि्	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

ये	-	तो	ब	ता	-	ते	रा	ना	-	म	है	क्या	-	-	-
प़	सा	सा	रे	ग्	रे	ग्	रे	सा	-	-	ऩि	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

ग़ज़ल

फ़िल्म : सरफ़रोश (1999)
ग़ज़लकार : निदा फाज़ली
संगीतकार : जतिन-ललित
गायक : जगजीत सिंह

होशवालों को ख़बर क्या बेख़ुदी क्या चीज़ है
इश्क़ कीजे फिर समझिए ज़िंदगी क्या चीज़ है

उनसे नज़रें क्या मिलीं रौशन फिज़ाएं हो गईं
आज जाना प्यार की जादूगरी क्या चीज़ है

खुलती ज़ुल्फों ने सिखाई मौसमों को शायरी
झुकती आंखों ने बताया मैकशी क्या चीज़ है

हम लबों से कह ना पाए उनसे हाल-ए-दिल कभी
और वो समझे नहीं ये ख़ामोशी क्या चीज़ है

रदीफ़ : क्या चीज़ है
क़ाफ़िया : बेख़ुदी, ज़िंदगी, जादूगरी, मैकशी, ख़ामोशी।
क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत

छंद : गांलग़ागा गांलग़ागा गांलग़ागा गांलग़ा

गांलग़ागा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है।

गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2
हो	श	वा	लों	को	ख़	बर	क्या	बे	ख़ु	दी	क्या	ची	ज़	है
इश्	क़	की	जे	फिर	स	मज	ये	ज़िं	द	गी	क्या	ची	ज़	है
उन	से	नज़	रें	क्या	मि	ली	रौ	शन	फ़ि	ज़ां	एं	हो	ग	ईं
आ	ज	जा	ना	प्या	र	की	जा	दू	ग	री	क्या	ची	ज़	है

सात मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप

(हरेक पंकित का दूसरी मात्रा से आरंभ)

-	गां	-	ल	ग़ा	-	गा	-	-	गां	-	ल	ग़ा	-	गा	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	गां	-	ल	ग़ा	-	गा	-	-	गां	-	ल	ग़ा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

हरेक पंकित का दूसरी मात्रा से आरंभ

Original Scale : C# (काली 1) = सा

गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग्‌ ग म प ध नि्‌

हूं	-	-	-	-	-	हूं -	- -	हूं	-	-	-	-	-	-	-
म	-	-	-	-	-	ग रे	सा नि़्	रे	-	-	-	-	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	आ	-	हा	आ	- हा	-	हा	हा	-	-	-	-	-	-	-
-	ध़	-	नि़्	सा	- ग	-	प	म	-	-	-	-	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	हो	-	श	वा	-	लों	-	को	-	-	ख़	ब	र	क्या	-
-	म	-	म	म	-	प	म	रे	-	-	रे	रे	-	रे	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	बे	-	ख़ु	दी	-	क्या	-	-	ची	-	ज़	है	-	-	-
-	नि़्	-	नि़्	रे	सा	रे	म	-	रे	सा	सा	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	इ	श्	क़	की	-	जे	-	-	फि	र	स	म	झि	ए	-
-	ध़	-	ध़	नि्	-	सा	-	-	रे	-	रे	रे	ग	ग	रे
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	इ	श्	क़	की	-	जे	-	-	फि	र	स	म	झि	ए	-
-	ध़	-	ध़	नि्	रे	सा	-	-	रे	-	रे	रे	ग	ग	रे
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	ज़िं	-	द	गी	-	क्या -	-	-	ची	-	ज़	है	-	-	-
-	प	-	प	प	म	ध प	म	-	म	-	म	म	ग	रे	सा
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	उ -	न	से	न	ज़	रें	-	-	क्या	-	मि	लीं	-	-	रौ
-	ध प	म	म	म	-	म	ग	-	रे	-	प	प	-	-	प
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

श	न	-	फ़ि	ज़ां	-	एं	-	-	हो -	-	ग	ईं	-	-	-
प	ग	-	ग	म	-	प	-	ध	ध प	म	म	म	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	ऊं	हूं	हूं	हूं	-	-	-	-	आ	हा	हा	हा	हा	-	-
-	म	ध	सां	नि्	-	-	-	-	ग	प	म	ग्	रे	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	ला	-	ला	ला	- ला	-	ला	ला	-	-	-	-	-	-	-
-	ध़	-	नि्	सा	- ग	-	प	म	-	-	-	ध	प	म	प
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	उ -	न	से	न	ज़	रें	-	-	क्या	-	मि	लीं	-	-	रौ
ध	ध प	म	म	म	-	म	ग	-	रे	-	प	प	-	-	प
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

श	न	-	फ़ि	ज़ां	-	एं	-	-	हो -	-	ग	ईं	-	-	-
प	ग	-	ग	म	-	प	-	ध	ध प	म	म	म	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

-	आ	-	ज	जा	-	ना	-	-	प्या	-	र	की	-	-	-
-	म	-	म	म	-	प	म	-	रे	-	रे	रे	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

जा	- दू	-	ग	री	-	क्या	-	-	ची	-	ज़	है	-	-	-
नि़्	- नि़्	-	नि़्	रे	सा	रे	म	-	रे	सा	सा	सा	-	-	-
1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8

गीत

फ़िल्म : बातों बातों में (1979)
गीतकार : योगेश
संगीतकार : राजेश रोशन
गायक : किशोरकुमार

कहां तक ये मन को अंधेरे छलेंगे
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

कभी सुख कभी दुख यही ज़िंदगी है
ये पतझड़ का मौसम घड़ी दो घड़ी है
नये फूल कल फिर डगर में खिलेंगे
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

भले तेज़ कितना हवा का हो झोंका
मगर अपने मन में तू रख ये भरोसा
जो बिछड़े सफ़र में तुझे फिर मिलेंगे
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

कहे कोई कुछ भी मगर सच यही है
लहर प्यार की जो कहीं उठ रही है
उसे एक दिन तो किनारे मिलेंगे
उदासी भरे दिन कभी तो ढलेंगे

स्थायी :-
रदीफ़ : *
क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+लेंगे (छलेंगे-ढलेंगे)

अंतरा 1 :-
अंतरे की रदीफ़ : है
अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत (ज़िंदगी-घड़ी)

अंतरा 2 :-
अंतरे की रदीफ़ : *
अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकारांत (झोंका-भरोसा)

अंतरा 3 :-
अंतरे की रदीफ़ : है
अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+ही (यही-रही)

सभी अंतरे की मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : इकार+लेंगे (खिलेंगे-मिलेंगे)

छंद : लगांग़ा लगांग़ा लगांग़ा लगांग़ा

लगांग़ा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।

ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2
क	हां	तक	ये	मन	को	अं	धे	रे	छ	लें	गे
उ	दा	सी	भ	रे	दिन	क	भी	तो	ढ	लें	गे
क	भी	सुख	क	भी	दुख	य	ही	ज़िं	द	गी	है
ये	पत	झड़	का	मौ	सम	घ	ड़ी	दो	घ	ड़ी	है
न	ये	फू	ल	कल	फिर	ड	गर	में	खि	लें	गे
उ	दा	सी	भ	रे	दिन	क	भी	तो	ढ	लें	गे

पांच मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंकित का तीसरी मात्रा से आरंभ)

ल	गां	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	ग़ा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ल	गां	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	ग़ा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

हरेक पंकित का तीसरी मात्रा से आरंभ

Original Scale : E (सफ़ेद 3) = सा

गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग म म् प ध नि

क	हां	-	त	क	ये	म	न	-	-	को	-	-	-	*	*
प़	ध़	-	सा	-	रे	ग	-	-	-	प	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

अं	धे	-	रे	-	छ	लें	-	-	-	गे	-	-	-	*	*
ग	प	-	ग	-	रे	सा	ग	रे	-	रे	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

उ	दा	-	सी	-	भ	रे	-	-	-	दि	न	-	-	*	*
प़	ध़	-	सा	-	नि़	रे	-	-	-	प	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

क	भी	-	तो	-	ढ	लें	-	-	-	गे	-	-	-	*	*
ग	ग	-	रे	-	सा	सा	-	-	-	सा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

क	भी	-	सु	ख	क	भी	-	-	-	दु	ख	-	-	*	*
प़	ध़	-	रे	-	सा	सा	-	-	-	सा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

य	ही	-	ज़िं	-	द	गी	-	-	-	है	-	-	-	*	*
प़	ध़	-	रे	-	सा	सा	-	-	-	सा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ये	प	त	झ	ड़	का	मौ	-	-	-	स	म	-	-	*	*
ग	ग	म	प	ध	प	ध	-	-	-	ध	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

घ	ड़ी	-	दो	-	घ	ड़ी	-	-	-	है	-	-	-	*	*
प	ध	-	प	-	म्	प	-	-	-	प	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ये	प	त	झ	ड़	का	मौ	-	-	-	स	म	-	-	*	*
ग	ग	म	प	ध	प	ध	-	सां	नि	ध	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

घ	ड़ी	-	दो	-	घ	ड़ी	-	-	-	है	-	-	-	*	*
प	ध	-	प	-	म्	प	-	-	म	ग	रे	सा	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

न	ये	-	फू	-	ल	क	ल	-	-	फि	र	-	-	*	*
प़	ध़	-	सा	-	रे	ग	-	-	-	प	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ड	ग	र	में	-	खि	लें	-	-	-	गे	-	-	-	*	*
ग	प	-	ग	-	रे	सा	ग	रे	-	रे	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

उ	दा	-	सी	-	भ	रे	-	-	-	दि	न	-	-	*	*
प़	ध़	-	सा	-	ऩि	रे	-	-	-	प	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

क	भी	-	तो	-	ढ	लें	-	-	-	गे	-	-	-	⁕	⁕
ग	ग	-	रे	-	सा	सा	-	-	-	सा	-	-	-	-	-
3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2

ग़ज़ल

फ़िल्म : दो बदन (1966)

ग़ज़लकार : शकील बदायूंनी

संगीतकार : रवि

गायक : मुहम्मद रफ़ी

भरी दुनिया में आख़िर दिल को समझाने कहां जाएं
मुहब्बत हो गई जिनको वो दीवाने कहां जाएं

लगे है शम्मा पर पहरे ज़माने की निगाहों के
जिन्हें जलने की हसरत है वो परवाने कहां जाएं

सुनाना भी जिन्हें मुश्किल छुपाना भी जिन्हें मुश्किल
ज़रा तू ही बता ऐ दिल वो अफ़साने कहां जाएं

नज़र में उलझने दिल में है आलम बेक़रारी का
समझ में कुछ नहीं आता सुकूं पाने कहां जाएं

रदीफ़ : कहां जाएं

क़ाफ़िया : समझाने, दीवाने, परवाने, अफ़साने, पाने।

क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ने

छंद : लग़ागागां लग़ागागां लग़ागागां लग़ागागां

लग़ागागां संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।

ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	गा 2	गां 2
भ	री	दुन्	या	में	आ	ख़िर	दिल	को	सम	झा	ने	क	हां	जा	एं
मु	हब्	बत	हो	ग	ई	जिन	को	वो	दी	वा	ने	क	हां	जा	एं
ल	गे	है	शम्	मा	पर	पह	रे	ज़	मा	ने	की	नि	गा	हों	के
जि	न्हें	जल	ने	की	हस	रत	है	वो	पर	वा	ने	क	हां	जा	एं

सात मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप

(हरेक पंकित का चौथी मात्रा से आरंभ)

ल	ग़ा	-	गा	-	गां	-	-	ल	ग़ा	-	गा	-	गां	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

ल	ग़ा	-	गा	-	गां	-	-	ल	ग़ा	-	गा	-	गां	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

हरेक पंकित का चौथी मात्रा से आरंभ

Original Scale : E (सफ़ेद 3) = सा

गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे़् रे ग् म प ध् नि्

भ	री	-	दु	नि	या	-	-	में	आ	-	ख़ि	र	दि	ल	-
सा	सा	रे़्	ग्	म	ग्	-	-	रे़्	सा	नि़्	सा	रे़्	सा	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

को	स	म	झा	-	ने	-	-	क	हां	-	जा	-	एं	-	-
सा	सा	ग्	म	प	ध्	-	-	प	ध्	म	प	ग्	म	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

मु	ह	ब्	ब	त	-	हो	-	ग	ई	-	जि	न	को	-	-
नि्	नि्	-	नि्	-	-	ध्	नि्	ध्	प	म	प	ध्	नि्	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

वो	दी	-	वा	-	ने	-	-	क	हां	-	जा	-	एं	-	-
प	प	नि्	नि्	रें़्	सां	-	-	प	ध्	म	प	ग्	म	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

ल	गे	-	है	-	-	श	म्	मा	प	र	प	ह	रे	-	-
सां	सां	-	सां	-	-	नि्	सां	नि्	ध्	-	नि्	-	सां	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

ज़	मा -	-	ने	-	की	-	-	नि	गा -	-	हों	-	के	-	-
सां	सां रें	गं्	गं्	रें	गं्	-	-	सां	सां रें्	गं्	रें्	सां	सां	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

ज़	मा -	-	ने	-	-	की -	-	नि	गा	- -	हों	-	के	-	-
सां	नि् सां	नि्	ध्	प	-	ग् म	प	म	ग्	म ग्	रे्	सा	सा	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

जि	न्हें	-	ज	ल	ने	-	-	की	ह	स	र	त	है	-	-
सा	सा	रे्	ग्	म	ग्	-	-	रे्	सा	ऩि्	सा	रे्	सा	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

वो	प	र	वा	-	ने	-	-	क	हां	-	जा	-	एं	-	-
सा	सा	ग्	म	प	ध्	-	-	प	ध्	म	प	ग्	म	-	-
4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3

नज़म

फ़िल्म : कभी कभी (1976)
गीतकार : साहिर लुधियानवी
संगीतकार : खैय्याम
गायक : मुकेश - लता मंगेश्कर

कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है
कि जैसे तुझको बनाया गया है मेरे लिये
तू अब से पहले सितारों में बस रही थी कहीं
तुझे ज़मीं पे बुलाया गया है मेरे लिये

कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है
कि ये बदन ये निगाहें मेरी अमानत हैं
ये गेसुओं की घनी छांव है मेरी ख़ातिर
ये होंठ और ये बाहें मेरी अमानत हैं

कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है
कि जैसे बजती हैं शहनाइयां सी राहों में
सुहाग रात है घूंघट उठा रहा हूं मैं
सिमट रही है तू शरमा के अपनी बाहों में

कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है
कि जैसे तू मुझे चाहेगी उम्र भर यूं ही
उठेगी मेरी तरफ़ प्यार की नज़र यूं ही
मैं जानता हूं के तू ग़ैर है मगर यूं ही

इस नज़म के हरेक बंद में चार पंक्ति है। हरेक बंद की पहली पंक्ति 'कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है' ही है। पहले, दूसरे और तीसरे बंद की दूसरी और चौथी पंक्ति में रदीफ़-क़ाफ़िया को निभाया गया है तथा चौथे (अंतिम) बंद की दूसरी, तीसरी और चौथी पंक्ति में रदीफ़-क़ाफ़िया को निभाया गया है। हरेक बंद में रदीफ़ और क़ाफ़िया-व्यवस्था अलग अलग है।

बंद 1 :-
रदीफ़ : गया है मेरे लिये
क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+या (बनाया-बुलाया)

बंद 2 :-
रदीफ़ : मेरी अमानत हैं
क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+हें (निगाहें-बाहें)

बंद 3 :-
रदीफ़ : में
क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+हों (राहों-बाहों)

बंद 4 :-
रदीफ़ : यूं ही
क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+र (भर-नज़र-मगर)

छंद : लग़ालगां लल़गागां लग़ालगां लल़गा

अनुक्रम से लग़ालगां और लल़गागां संधि के मिश्र स्वरूप (लग़ालगां लल़गागां) के दो आवर्तनों का प्रयोग करने के बाद अंतिम संधि के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से इस छंद की रचना होती है कि जिसमें अंतिम संधि के दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट है।

ल 1	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ल 1	ल़ 1	गा 2	गां 2	ल 1	ग़ा 2	ल 1	गां 2	लल़/गा 2	गा 2
क	भी	क	भी	मे	रे	दिल	में	ख़	या	ल	आ	ता	है
कि	जै	से	तुझ	को	ब	ना	या	ग	या	है	मे	रेलि	ये
तू	अब	से	पह	ले	सि	ता	रों	में	बस	र	ही	थीक	हीं
तु	झे	ज़	मीं	पे	बु	ला	या	ग	या	है	मे	रेलि	ये

छह मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंकित का पांचवीं मात्रा से आरंभ)

ल	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	ल	ल़	गा	-	गां	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ल	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	ल	ल़	गा	-	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

OR

ल	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	ल	ल़	गा	-	गां	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ल	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	गा	-	गा	-	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ताल : कहरवा (8 मात्रा)
हरेक पंकित का पांचवीं मात्रा से आरंभ

Original Scale : E (सफ़ेद 3) = सा
गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग म म् प ध नि

क	भी	-	क	भी	-	-	-	मे	रे	दि	ल	में	-	-	-
प	प	म्	ध	प	-	-	-	ग	ग	रे	-	ग	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ख़	या	-	ल	आ	-	-	-	ता	-	है -	-	*	*	*	*
ग	ग	ध	प	प	-	-	म्	ग	रे	ग रे	सा	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

कि	जै	-	से	तु	झ	को	-	-	ब	ना	-	या	-	-	-
ग	ग	-	ग	रे	-	ग	-	-	ग	रे	-	ग	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ग	या	-	है	मे	-	-	- -	रे	लि	ये	-	*	*	*	*
रे	रे	-	सा	सा	रे	-	ग रे	सा	सा	सा	ऩि	ध़	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

तू	अ	ब	से	प	ह	ले	-	-	सि	ता	-	रों	-	-	- -
प	म्	ग	म्	प	-	प	-	-	प	प	-	प	ध	-	नि ध
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

में	ब	स	र	ही	-	-	-	थी	क -	हीं -	-	*	*	*	*
प	प	-	प	म्	प	-	-	म्	ध प	म् ग	-	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

तु	झे	-	ज़	मीं	-	पे	-	-	बु	ला	-	या	-	-	-
ग	ग	-	ग	रे	-	ग	-	-	ग	रे	-	ग	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ग	या	-	है	मे	-	-	- -	रे	लि	ये	-	*	*	*	*
रे	रे	-	सा	सा	रे	-	ग रे	सा	सा	सा	ऩि	ध़	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

क	भी	-	क	भी	-	-	-	मे	रे	दि	ल	में	-	-	-
सा	सा	-	ऩि	रे	-	-	-	रे	रे	रे	-	रे	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

ख़	या	-	ल	आ	-	-	-	ता -	-	है -	-	*	*	*	*
रे	रे	-	रे	रे	ग	रे	सा	सा रे	ग	ग	-	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

कि	जै	- -	से	ब	ज	ती	हैं	*	*	*	*	श	ह	ना	-
ग	रे	ग रे	सा	सा	-	सा	सा	-	-	-	-	रे	म	म	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

इ	यां	-	सी	रा	-	हों	-	में	-	-	-	*	*	*	*
म	म	-	म	ग	-	ग	म	रे	-	-	सा	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

सु	हा	-	ग	रा	-	त	है	*	*	*	*	घूं	-	घ	ट
प	प	-	प	ध	-	ध	ध	-	-	-	-	प	सां	नि	ध
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

उ	ठा	-	र	हा	-	-	-	हूं -	- -	मैं	-	*	*	*	*
नि	ध	प	प	म्	प	-	-	म् ध	प म्	ग	-	-	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

सि	म	ट	र	ही	-	है	-	-	तू	श	र	मा	-	के	-
ग	ग	-	ग	रे	-	ग	-	-	ग	रे	-	ग	-	ग	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

-	अ	प	नी	बा	-	-	- -	हों	-	में	-	*	*	*	*
-	रे	-	सा	सा	रे	-	ग रे	सा	-	सा	ऩि	ध़	-	-	-
5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4

दूसरा और चौथा बंद पहले बंद की तरह ही गाया-बजाया जाएगा।

गीत

फ़िल्म : सफ़र (1970)
गीतकार : इन्दीवर
संगीतकार : कल्याणजी - आनंदजी
गायक : किशोरकुमार

ज़िंदगी का सफ़र है ये कैसा सफ़र
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं
है ये कैसी डगर चलते हैं सब मगर
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

ज़िंदगी को बहुत प्यार हमने दिया
मौत से भी मुहब्बत निभाएंगे हम
रोते-रोते ज़माने में आए मगर
हंसते-हंसते ज़माने से जाएंगे हम
जाएंगे पर किधर है किसे ये ख़बर
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

ऐसे जीवन भी है जो जीए ही नहीं
जिनको जीने से पहले ही मौत आ गईं
फूल ऐसे भी हैं जो खिले ही नहीं
जिनको खिलने से पहले ख़िजां खा गईं
है परेशां नज़र थक गए चारागर
कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं

हरेक पंक्ति लंबी होने की वजह से एक पंक्ति को दो पंक्ति में बांटा गया है। यानि हर दो पंक्ति को मिला कर एक ही पंक्ति समझना होगा।

स्थायी :-
मूल रदीफ़ : कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+र (सफ़र-मगर)

अंतरा 1 :-
अंतरे की रदीफ़ : हम
अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+एंगे (निभाएंगे-जाएंगे)

मूल रदीफ़ : कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+र (ख़बर)

अंतरा 2 :-
अंतरे की रदीफ़ : गईं
अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकारांत (आ-खा)
मूल रदीफ़ : कोई समझा नहीं कोई जाना नहीं
मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+र (चारागर)

छंद : ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां

ग़ालगां संधि के आठ आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।

ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2
ज़िं	द	गी	का	स	फ़र	है	ये	कै	सा	स	फ़र
को	ई	सम	झा	न	हीं	को	ई	जा	ना	न	हीं
है	ये	कै	सी	ड	गर	चल	ते	हैं	सब	म	गर
को	ई	सम	झा	न	हीं	को	ई	जा	ना	न	हीं
ज़िं	द	गी	को	ब	हुत	प्या	र	हम	ने	दि	या
मौ	त	से	भी	मु	हब्	बत	नि	भा	एं	गे	हम
रो	ते	रो	ते	ज़	मा	ने	में	आ	ए	म	गर
हंस	ते	हंस	ते	ज़	मा	ने	से	जा	एं	गे	हम
जा	एं	गे	पर	कि	धर	है	कि	से	ये	ख़	बर
को	ई	सम	झा	न	हीं	को	ई	जा	ना	न	हीं

पांच मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंकित का छठी मात्रा से आरंभ)

ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-	ग़ा	-	ल	गां	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ताल : कहरवा (8 मात्रा)
हरेक पंकित का छठी मात्रा से आरंभ

Original Scale : F# (काली 3) = सा
गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग म प ध नि्

ज़िं	-	द	गी	-	-	-	-	का	-	स	फ़	र	-	-	-
प़	-	प़	सा	-	-	-	-	सा	-	सा	रे	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

है	-	ये	कै	-	-	-	-	सा	-	स	फ़	र	-	-	-
रे	-	रे	रे	सा	-	नि़्	-	नि़्	-	नि़्	नि़्	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई	स	म	-	-	-	झा	-	न	हीं	-	-	-	-
नि्	-	नि्	रे	-	-	-	-	रे	-	रे	ग	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई -	जा	-	-	-	-	ना	-	न	हीं	-	-	-	-
रे	ग	रे सा	सा	-	-	-	-	सा	-	सा	सा	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

है	-	ये	कै	-	-	-	-	सी	-	ड	ग	र	-	-	-
ग	प	म	ग	-	-	-	-	ग	प	म	ग	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

च	ल	ते	हैं	-	-	-	-	स	ब	म	ग	र	-	-	-
ग	प	म	ग	-	-	-	-	प	म	ग	ग	रे	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई	स	म	-	-	-	झा	-	न	हीं	-	-	-	-
रे	-	रे	रे	-	-	-	-	रे	-	रे	ग	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई -	जा	-	-	-	-	ना	-	न	हीं	-	-	-	-
रे	ग	रे सा	सा	-	-	-	-	सा	-	सा	सा	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ज़िं	-	ग	गी	-	-	-	-	को	-	ब	हु	त	-	-	-
ग	-	म	प	-	-	-	-	ध	प	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

प्या	-	र	ह	म	-	-	-	ने	-	दि	या	-	-	-	-
म	-	ग	ग	रे	-	-	-	रे	प	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

मौ	-	त	से	-	-	-	-	भी	-	मु	ह	ब्	-	-	-
ग	-	म	ध	-	-	-	-	ध	-	ध	नि्	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ब	त	नि	भा	-	-	-	-	एं	-	गे	ह	म	-	-	-
ध	प	प	प	म	-	-	-	प	ध	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

रो	-	ते	रो	-	-	-	-	ते	-	ज़	मा	-	-	-	-
ग	-	म	प	-	-	-	-	ध	प	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ने	-	में	आ	-	-	-	-	ए	-	म	ग	र	-	-	-
म	-	ग	ग	रे	-	-	-	रे	प	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

हं	स	ते	हं	स	-	-	-	ते	-	ज़	मा	-	-	-	-
ग	-	म	ध	-	-	-	-	ध	-	ध	नि्	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ने	-	से	जा	-	-	-	-	एं	-	गे	ह	म	-	-	-
ध	प	प	प	म	-	-	-	प	ध	प	प	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

जा	-	एं	गे	-	-	-	-	प	र	कि	ध	र	-	-	-
प़	-	प़	सा	-	-	-	-	सा	-	सा	रे	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

है	-	कि	से	-	-	-	-	ये	-	ख़	ब	र	-	-	-
रे	-	रे	रे	सा	-	नि़्	-	नि़्	-	नि़्	नि़्	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई	स	म	-	-	-	झा	-	न	हीं	-	-	-	-
नि़्	-	नि़्	रे	-	-	-	-	रे	-	रे	ग	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

को	-	ई -	जा	-	-	-	-	ना	-	न	हीं	-	-	-	-
रे	ग	रे सा	सा	-	-	-	-	सा	-	सा	सा	-	-	-	-
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

ग़ज़ल

ग़ज़लकार : फ़ना बुलंदशहरी
संगीतकार : ?
गायक : नुसरत फ़तेह अली खां

मेरे रश्क-ए-क़मर तूने पहली नज़र
जब नज़र से मिलाई मज़ा आ गया
बर्क़ सी गिर गई काम ही कर गई
आग ऐसी लगाई मज़ा आ गया

जाम में घौल कर हुस्न की मस्तियां
चांदनी मुस्कुराई मज़ा आ गया
चांद के साए में ऐ मेरे साक़िया
तूने ऐसी पिलाई मज़ा आ गया

नश्शा शीशे में अंगड़ाई लेने लगा
बज़्म-ए-रिन्दां में साग़र खनकने लगा
मैकदे पे बरसने लगीं मस्तियां
जब घटा गिर के छाई मज़ा आ गया

बे-हिजाबाना वो सामने आ गए
और जवानी जवानी से टकरा गई
आंख उनकी लड़ी यूं मेरी आंख से
देख कर ये लड़ाई मज़ा आ गया

आंख में थी हया हर मुलाक़ात पर
सुर्ख़ आरिज़ हुए वस्ल की बात पर
उसने शरमा के मेरे सवालात पे
ऐसे गर्दन झुकाई मज़ा आ गया

शेख़ साहब का ईमान बिक ही गया
देख कर हुस्न-ए-साक़ी पिघल ही गया
आज से पहले ये कितने मग़रूर थे
लुट गई पारसाई मज़ा आ गया

ऐ 'फ़ना' शुक्र है आज बाद-ए-फ़ना
उसने रख ली मेरे प्यार की आबरू
अपने हाथों से उसने मेरी क़ब्र पर
चादर-ए-गुल चढ़ाई मज़ा आ गया

हरेक पंक्ति लंबी होने की वजह से एक पंक्ति को दो पंक्ति में बांटा गया है। यानि हर दो पंक्ति को मिला कर एक ही पंक्ति समझना होगा।

छंद : ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां ग़ालगां
रदीफ़ : मज़ा आ गया
क़ाफ़िया : मिलाई, लगाई, मुस्कुराई, पिलाई, छाई, लड़ाई, झुकाई, पारसाई, चढ़ाई।
क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ई

ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2
मे	रे	रश्	के	क	मर	तू	ने	पह	ली	न	ज़र
जब	न	ज़र	से	मि	ला	ई	म	ज़ा	आ	ग	या
बर्	क़	सी	गिर	ग	ई	का	म	ही	कर	ग	ई
आ	ग	ऐ	सी	ल	गा	ई	म	ज़ा	आ	ग	या
जा	म	में	घो	ल	कर	हुस्	न	की	मस्	ति	यां
चां	द	नी	मुस्	कु	रा	ई	म	ज़ा	आ	ग	या
चां	द	के	सा	ए	में	ऐ	मे	रे	सा	क़ि	या
तू	ने	ऐ	सी	पि	ला	ई	म	ज़ा	आ	ग	या

ग़ालगां संधि के 5 मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना की दो ग़ालगां संधि को (10 मात्रिक शब्दों को) गाने के लिए 8 मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंक्ति का 6.5वीं मात्रा से आरंभ)

- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

हरेक पंक्ति का 7वीं मात्रा से भी आरंभ किया जा सकता है। ऐसा करने पर छंद के पहले गुरु को सिर्फ़ 7वीं मात्रा पर ही गाया जाएगा।

ताल : कहरवा (8 मात्रा)
हरेक पंक्ति का 6.5वीं मात्रा से आरंभ

Original Scale : C (सफ़ेद 1) = सा
गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे़ रे ग़ म प ध़ नि़

- मे	-	रे	र श्	- के	-	क़	मर	- तू	-	ने	पह	- ली	-	न	ज़र
- धं़	-	पं	पं मं	- मं	-	मं	मं	पं निं़	-	पं	गं़	- गं़	-	रें	गं़
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- / जब	-	न	ज़र	- से	-	पि	ला	- ई	-	म	ज़ा -	- आ	-	ग	या
- / नि़	-	सां	रें़	- रें़	-	रें़	मं	- धं़	-	मं	गं़ रें़	- गं़	-	रें़	सां
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- / बर्	-	क़	सी -	- / गिर	-	ग	ई	- का	-	म	ही	- / कर	-	ग	ई
- / धं़	-	पं	पं मं	- / मं	-	मं	मं	पं निं़	-	पं	गं़	- / गं़	-	रें	गं़
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- आ	-	ग	ऐ	- सी	-	ल	गा	- ई	-	म	ज़ा -	- आ	-	ग	या
- नि्	-	सां	रें्	- रें्	-	रें्	मं	- धं्	-	मं	गं् रें्	- गं्	-	रें्	सां
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- जा	-	म	में -	- घो	-	ल	कर	- / हुस्	-	न	की	- / मस्	-	ति	यां
- मं	-	पं	धं् निं्	- निं्	-	निं्	निं्	- / मं	-	पं	धं्	- / धं्	-	पं	धं्
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- चां	-	द	नी	- / मुस्	-	कु	रा	- ई	-	म	ज़ा -	- आ	-	ग -	या
- धं्		मं	रें्	- / रें्	-	रें्	गं्	- पं	-	पं	धं् निं्	- धं्	-	पं मं	मं
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- चां	-	द	के -	- सा	-	ए	में	- ऐ	-	मे	रे	- सा	-	क़ि	या
- धं्	-	पं	पं मं	- मं	-	मं	मं	पं निं्	-	पं	गं्	- गं्	-	रें	गं्
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

- तू	-	ने	ऐ	- सी	-	पि	ला	- ई	-	म	ज़ा -	- आ	-	ग	या
- नि्	-	सां	रें्	- रें्	-	रें्	मं	- धं्	-	मं	गं् रें्	- गं्	-	रें्	सां
6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0

नुसरत फ़तेह अली खां साहब ने तार सप्तक का प्रयोग करके इस ग़ज़ल को क़व्वाली-गायकी में प्रस्तुत किया है। इस ग़ज़ल को आप अपने स्केल के हिसाब से मध्य सप्तक में गा कर ग़ज़ल-गायकी की तरह भी प्रस्तुत कर सकते है।

गीत

फ़िल्म : मदारी

गायक : मुकेश - लता मंगेश्कर

संगीतकार : कल्याणजी - आनंदजी

गीतकार : फ़ारुख़ कैसर

दिल लूटनेवाले जादूगर अब मैंने तुझे पहचाना है
नज़रें तो उठा के देख ज़रा तेरे सामने ये दीवाना है

ये चांद सितारे देख न ले मेरे प्यार के नाज़ुक बंधन को
आंखों में छुपा कर रख लूंगा इस फूल से कोमल तनमन को
धीरे से कहो ये बात पिया जग अपना नही बेगाना है

अरमान था तुझको देखूं मैं सावन की नशीली रातों में
खो जाये पिया हम तुम दोनों इन प्यार की मीठी बातों में
तू सामने है तो सब कुछ है वरना ये चमन वीराना है

मैं प्यार की माला गुंथूंगी आशाओं की कलियां चुन चुन के
रूठे ना कहीं मुझसे दुनिया ये बात तुम्हारी सुन सुन के
अरमान भरे दिलवालों ने दुनिया का कहा कब माना है

स्थायी :-

मूल रदीफ़ : है

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ना (पहचाना-दीवाना)

अंतरा 1 :-

अंतरे की रदीफ़ : को

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+न (बंधन-मन)

मूल रदीफ़ : है

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ना (बेगाना)

अंतरा 2 :-

अंतरे की रदीफ़ : में

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+तों (रातों-बातों)

मूल रदीफ़ : है

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ना (वीराना)

अंतरा 3 :-

अंतरे की रदीफ़ : के

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : उकार+न (चुन-सुन)

अंतरे की अतिचुस्त क़ाफ़िया-व्यवस्था : उकार+न+उकार+न (चुनचुन-सुनसुन)

मूल रदीफ़ : है

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : आकार+ना (माना)

छंद : गागांगाग़ा गागांगाग़ा गागांगाग़ा गागांगाग़ा

गागांगाग़ा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।

गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2	गा 2	गां 2	गा 2	ग़ा 2
दिल	लू	टने	वा	ले	जा	दू	गर	अब	मैं	नेतु	झे	पह	चा	ना	है
नज़	रें	तोउ	ठा	के	दे	खज़	रा	तेरे	सा	मने	ये	दी	वा	ना	है
ये	चां	दसि	ता	रे	दे	खन	ले	मेरे	प्या	रके	ना	ज़ुक	बं	धन	को
आं	खों	मेंछु	पा	कर	रख	लूं	गा	इस	फू	लसे	को	मल	तन	मन	को
धी	रे	सेक	हो	ये	बा	तपि	या	जग	अप	नान	हीं	बे	गा	ना	है

आठ मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना को गाने के लिए आठ मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप
(हरेक पंकित का सातवीं मात्रा से आरंभ)

गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-	गा	-	गां	-	गा	-	ग़ा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

ताल : कहरवा (8 मात्रा)

हरेक पंकित का सातवीं मात्रा से आरंभ

Original Scale : F (सफ़ेद 4) = सा

गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे ग म प ध नि

प़	ध़	सा	सा	सा	सा	सा	-	प़	ध़	रे	रे	रे	रे	रे	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

सा	रे	ग	ग	रे	रे	ग	ग	रे	रे	सा	सा	सा	सा	सा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

दि	ल	लू	-	ट	ने	वा	-	ले	-	जा	-	दू	-	ग	र
सा	ऩि	सा	रे	रे	रे	रे	ग	रे	सा	रे	म	म	ग	ग	रे
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

अ	ब	मैं	-	ने	तू	झे	-	प	ह	चा	-	ना	-	है	-
रे	सा	सा	ग	ग	रे	सा	-	ऩि	ध़	ऩि	सा	सा	-	सा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

न	ज़	रें	-	तो	उ	ठा	-	के	-	दे	-	ख	ज़	रा	-
सा	ऩि	सा	रे	रे	रे	रे	ग	रे	सा	रे	म	म	ग	ग	रे
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

ते	रे	सा	-	म	ने	ये	-	दी	-	वा	-	ना	-	है	-
रे	सा	सा	ग	ग	रे	सा	-	ऩि	ध़	ऩि	सा	सा	-	सा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

ये	-	चां	-	द	सि	ता	-	रे	-	दे	-	ख	न	ले	-
म	ग	म	प	प	प	प	-	म	ग	म	प	प	प	प	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

मे	रे	प्या	-	र	के	ना	-	ज़ु	क	बं	-	ध	न	को	-
ध	प	म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	ग	रे	म	ग	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

आं	-	खों	-	में	छु	पा	-	क	र	र	ख	लूं	-	गा	-
म	ग	म	प	प	प	प	-	म	ग	म	प	प	-	प	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

इ	स	फू	-	ल	से	ना	-	ज़ु	क	त	न	म	न	को	-
ध	प	म	-	म	म	म	-	म	ग	रे	ग	रे	म	ग	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

धी	-	रे	-	से	क	हो	-	ये	-	बा	-	त	पि	या	-
सा	ऩि	सा	रे	रे	रे	रे	ग	रे	सा	रे	म	म	ग	ग	रे
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

ज	ग	अ	प	ना	न	हीं	-	बे	-	गा	-	ना	-	है	-
रे	सा	सा	ग	ग	रे	सा	-	ऩि	ध़	ऩि	सा	सा	-	सा	-
7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6

गीत

फ़िल्म : बेमिसाल (1982)

गीतकार : आनंद बक्षी

संगीतकार : आर. डी. बर्मन

गायक : किशोरकुमार

किसी बात पर मैं किसी से ख़फ़ा हूं
मैं ज़िंदा हूं पर ज़िंदगी से ख़फ़ा हूं

मुझे दोस्तों से शिकायत है शायद
मुझे दुश्मनों से मुहब्बत है शायद
मैं इस दोस्ती दुश्मनी से ख़फ़ा हूं

न जाने कहां कब किसे देखता हूं
मगर मैं जहां जब जिसे देखता हूं
समझता है वो मैं उसी से ख़फ़ा हूं

न जागा हुआ हूं न सोया हुआ हूं
मैं दिल के अंधेरो में खोया हुआ हूं
मैं इस चांद की चांदनी से ख़फ़ा हूं

स्थायी :-

मूल रदीफ़ : से ख़फ़ा हूं

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत (किसी-ज़िंदगी)

अंतरा 1 :-

अंतरे की रदीफ़ : है शायद

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : अकार+त (शिकायत-मुहब्बत)

मूल रदीफ़ : से ख़फ़ा हूं

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत (दुश्मनी)

अंतरा 2 :-

अंतरे की रदीफ़ : देखता हूं

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : इकार+से (किसे-जिसे)

मूल रदीफ़ : से ख़फ़ा हूं

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत (उसी)

अंतरा 3 :-

अंतरे की रदीफ़ : हुआ हूं

अंतरे की क़ाफ़िया-व्यवस्था : ओकार+या (सोया-खोया)

मूल रदीफ़ : से ख़फ़ा हूं

मूल क़ाफ़िया-व्यवस्था : ईकारांत (चांदनी)

छंद : लगांग़ा लगांग़ा लगांग़ा लगांग़ा

लगांग़ा संधि के चार आवर्तनों का प्रयोग करने से इस छंद की रचना होती है।

ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2	ल 1	गां 2	ग़ा 2
कि	सी	बा	त	पर	मैं	कि	सी	से	ख़	फ़ा	हूं
मैं	ज़िं	दा	हूं	पर	ज़िं	द	गी	से	ख़	फ़ा	हूं
मु	झे	दो	स	तों	से	शि	का	यत	है	शा	यद
मु	झे	दुश्	म	नों	से	मु	हब्	बत	है	शा	यद
मैं	इस	दो	स	ती	दुश्	म	नी	से	ख़	फ़ा	हूं

लगांग़ा संधि के 5 मात्रिक आवर्तन में लिखी गई इस रचना की दो लगांग़ा संधि को (10 मात्रिक शब्दों को) गाने के लिए 8 मात्रिक ताल कहरवा का प्रयोग किया गया है।

छंद का ताल कहरवा में मूल स्वरूप

(हरेक पंकित का आठवीं मात्रा से आरंभ)

ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-	ल	गां	- ग़ा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

ताल : कहरवा (8 मात्रा)
हरेक पंकित का आठवीं मात्रा से आरंभ

Original Scale : G# (काली 4) = सा
गीत में प्रयुक्त स्वर : सा रे॒ रे ग॒ ग म प ध॒ नि॒

कि	सी	- बा	-	त	पर	- मैं	-	कि	सी	- से	-	ख़	फ़ा	- हूं	-
सा	नि़॒	- सा	-	रे॒	नि़॒	- सा	-	रे॒	नि़॒	- सा	-	रे॒	नि़॒	- ग॒	रे॒
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

-	-	-	-	-	-	-	-
-	-	-	म	रे॒	-	-	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

मैं	ज़िं -	- दा	-	हूं	पर	- ज़िं	-	द	गी	- से	-	ख़	फ़ा	- हूं	-
सा	रे॒ ग॒	- रे॒	-	सा	नि़॒	- सा	-	रे॒	नि़॒	- ग॒	-	रे॒	सा	- सा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

-	-	-	-	-	-	-	हो
-	-	-	-	-	-	-	प
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

ख़	फ़ा -	- हूं	-	ख़	फ़ा -	- हूं	-	ख़	फ़ा -	- हूं	-	-	-	-	-
प	प म	- म	-	म	म ग॒	- ग॒	-	ग॒	ग॒ रे॒	- म	-	-	-	-	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

कि	सी	- बा	-	त	पर	- मैं	-	कि	सी	- से	-	ख़	फ़ा	- हूं	-
सा	नि्	- सा	-	रे्	नि्	- सा	-	रे्	नि्	- ग्	-	रे्	सा	- सा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

मु	झे	- दो	-	स	तों	- से	-	शि	का	- / यत	-	है	शा -	- / यद	-
प	प	- प	-	ध्	प	- प	-	सा	सा	- / रे्	-	ग्	रे् सा	- / सा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

मु	झे	- / दुश्	-	म	नों	- से	-	मु	हब्	- / बत	-	है	शा -	- / यद	-
प	प	- / प	-	ध्	प	- प	-	सा	सा	- / रे्	-	ग्	रे् सा	- / सा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

मैं	इस	- दो	-	स	ती	- / दुश्	-	म	नी	- से	-	ख़ -	फ़ा -	- हूं	-
ग	ग	- ग	-	ग	ग	- / ग	-	प	म	- म	-	म ग	रे ग	- रे	सा
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

ख़	फ़ा -	- हूं	-	ख़	फ़ा -	- हूं	-	ख़	फ़ा -	- हूं	-	-	-	-	-
प	प म	- म	-	म	म ग्	- ग्	-	ग्	ग् रे्	- म	-	-	-	-	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7

कि	सी	- बा	-	त	पर	- मैं	-	कि	सी	- से	-	ख़	फ़ा	- हूं	-
सा	नि्	- सा	-	रे्	नि्	- सा	-	रे्	नि्	- ग्	-	रे्	सा	- सा	-
8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7	8	1 ×	2	3	4	5 0	6	7